दक्षिण पूर्व एशिया का स्वर्णिम अध्याय–सुवर्णद्वीप में बौद्ध संस्कृति

डॉ. पुष्पलता
दक्ष एकेडमी, वाराणसी
मो. नं. : 9455183714, 8305176960
ईमेल– kumari89lata@gmail.com

सारांशिका

स्याम देशवासियों के मन में एक बात घुसी रहती थी कि चाहे तीन मास ही क्यों न हो प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में एक बार भिक्षु अवश्य बनना चाहिए। इससे जहाँ यह हानि पहुँची कि भिक्षुव्रत सर्वसुलभ हो गया है वहीं यह भी लाभ हुआ कि समस्त जाति में एकानुभूति पैदा हो गयी। भिक्षुक और गृहस्थ एक दूसरे का ध्यान रखने लगे। देखने में यह बात साधारण लग रही है पर कल्पना करें कि जब कोई व्यक्ति तीन मास तक भिक्षुक के रूप में मनसा–वाचा–कर्मणा रह लेगा तो निश्चित ही उसमें ''बुद्धत्व'' की भावना बलवती होती रहेगी जो स्वकल्याण से आगे बढ़कर लोककल्याण का पथ प्रशस्त करेगी। स्याम देश के भिक्षुओं में सर्वोपरि स्थान पाने वाले भिक्षु को 'संघराज' कहा जाता था। यह पद प्रायः किसी राजपरिवार के व्यक्ति को ही प्राप्त होता था। इससे स्पष्ट है कि स्याम देश में बौद्ध धर्म को राज्याश्रय प्राप्त था। डॉ० महेश कुमार शरण के शब्दों में स्याम में बौद्ध धर्म चार कालों में लोगों का धर्म बना। प्रथम काल थेरवाद या दक्षिण बौद्ध धर्म, दूसरा काल है महायान या उत्तरी बौद्ध धर्म, तीसरा काल है बर्मा (पगान) बौद्ध धर्म तथा चौथा है सिंहली बौद्ध धर्म।

बौद्ध मंदिरों को थाई भाषा में वाट कहा जाता है जो गाँवों की आत्मा माना जाता है। दूर से बौद्ध मंदिरों के आकाश छूते गुम्बज की भव्यता दिव्यता को देखते ही मुख से निकल पड़ता है ''धम्मं शरणं गच्छामि, संधं शरणं गच्छामि, बुद्धं शरणं गच्छामि''। स्याम देश की बौद्ध संस्कृति भारतीय सांस्कृतिक आत्मा का विश्वव्यापी प्रसार है जिसे जीवन्त बनाये रखना मानवता के हित में है।

मुख्य शब्द : स्वर्णिम, अध्याय, बौद्ध, संस्कृति, ज्ञान।

प्रस्तावना

ईसा पूर्व छठी शताब्दी का समय धार्मिक दृष्टि से क्रान्ति अथवा महापरिवर्तन का काल माना जाता है। इस समय परम्परागत वैदिक धर्म एवं समाज में व्याप्त कुरीतियाँ, पाखण्डों, कुप्रथाओं, छुआछूत, ऊँच नीच, आदि के विरुद्ध आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था। यह आन्दोलन कोई आकस्मिक घटना नहीं थी वरन् यह चिरकाल से संचित हो रहे असंतोषों का ही चरम परिणाम था। समय की गति के साथ नवीन विचारधाराओं का आविर्भाव हुआ। ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेत्तर श्रमणों, परिव्राजकों, भिक्षुओं आदि के अनेक सम्प्रदाय अस्तित्व में आये, जिन्होंने विभिन्न मतों एवं वादों का प्रचार किया। बौद्ध ग्रन्थों में अनेक सम्प्रदायों तथा आचार्यों का उल्लेख मिलता है, जिनकी संख्या 62 बतायी गयी है जो महात्मा बुद्ध के उदय के पूर्व समाज में विद्यमान थे। ऐसे ही धार्मिक उथल–पुथल के युग में बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध का जन्म लुम्बिनी उद्यान में 563 ईसा पूर्व में हुआ। गौतम बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ था। ये बचपन से ही चिन्तन प्रधान निवृत्तिपरक स्वभाव के थे। जीवन को, उसकी नश्वरता को रोग, जरा आदि को देखकर विवाह एवं पुत्र के जन्म लेने पर भी उन्होंने गृहत्याग कर दिया। बुद्ध का गृहत्याग उनका महाभिनिष्क्रमण कहलाता है। यत्र–तत्र दार्शनिक शिक्षा तपस्या आदि करते हुए गया के निकट बोध गया में पीपल के वृक्ष के नीचे बैठे हुए गौतम को ज्ञान प्राप्त हुआ और ज्ञान प्राप्त होने पर वे भगवान बुद्ध कहलाये। ज्ञान प्राप्ति के बाद जनता के दुःख को दूर करने के लिए सर्वप्रथम सारनाथ वाराणसी में उन्होंने अपने पाँच साथियों को उपदेश देकर धर्मचक्र प्रवर्तन किया। लोगों को प्रव्रज्या देकर भिक्षु बनाना प्रारंभ किया तथा उन्हें सर्वत्र अपने उपदेशों का प्रचार करने की शिक्षा दी। 45 वर्ष तक वे स्वयं अपने सिद्धान्तों का प्रचार करते रहे और अन्त में 80 वर्ष की आयु में उनका कुशीनगर वर्तमान जनपद पडरौना (उ0प्र0) में महापरिनिर्वाण हुआ।

सुवर्ण दीप में बौद्ध संस्कृति

गौतम बुद्ध विश्व के महानतम विचारकों में से हैं। उनका धर्म विश्व का क्रान्तिकारी धर्म है। इस धर्म ने छठी शताब्दी ईसवी पूर्व में क्रान्ति की जो प्रेरणा दी वह महान थी, उनका धर्म महान था, इस धर्म ने विश्व को प्रभावित किया, विश्व को शान्ति का उपदेश दिया। बौद्ध धर्म भारतवर्ष में अत्यधिक लोकप्रिय रहा है। भगवान बुद्ध के जीवनकाल में ही उसने लोकप्रियता प्राप्त की थी। बौद्ध धर्म के प्रचार एवं प्रसार के पीछे प्रारम्भ में बुद्ध का महान आकर्षक, पवित्र चरित्र तथा व्यक्तित्व था। वे विश्व के महान् धर्मोपदेशकों में थे। उनका व्यक्तित्व तथा चरित्र प्रभावोत्पादक तथा आकर्षक था। उपर्युक्त परिस्थितियों में राजा से लेकर प्रजा तक उनकी ओर आकृष्ट हुए बुद्ध की साधना उनके अकाट्य तर्क और उनकी सरलता उनके विवेक क्षमता मधुर हृदयग्राही उपदेशों ने ब्राह्मणों, पण्डितों राजाओं तथा शूद्रों तक को आकृष्ट किया। बुद्ध महान त्यागी थे। राजसुखों का परित्याग उन्होंने लोक कल्याण के लिए किया था। मानवतावादी समस्त गुण बुद्ध में थे। क्षमता, सहनशीलता, दया, स्नेह, करुणा आदि गुणों के वे अक्षय कोष थे। यही उनका व्यक्तित्व था। बुद्ध के प्रभावशाली व्यक्तित्व से, कोई भी जो उनके सम्पर्क में आया, प्रभावित हुए बिना न रहा। जिस सर्वग्राह्य तर्क के साथ वे ब्राह्मणों, पण्डितों के विचारों का मुंहतोड़ उत्तर दिया करते थे एवं करुणा, मैत्री, दया आदि जिन मानव भावनाओं से उनके उपदेश सप्राण हो जाते उनके कारण क्या पुरोहित क्या राजा और क्या प्रजा सभी संतुष्ट होते थे।

यह विडम्बना की ही स्थिति है कि बौद्ध धर्म जिसकी उत्पत्ति भारत एवं विशेषकर उत्तर प्रदेश की सीमान्तर्गत ही हुई, आज विदेशों में महत्व प्राप्त कर चुका है। मौर्य सम्राट् अशोक ने कलिंग युद्ध की विभीषिका को देखकर युद्ध न करने की प्रतिज्ञा लेकर बौद्ध धर्म को अपनाया था और उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए उत्तर और सोण नामक दो महाथेरों को सुवर्णद्वीप और सुवर्णभूमि की ओर भेजा था उसी का परिणाम है कि आज के दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों में यह धर्म जीवित है। इन सभी देशों में राजकीय धर्म के रूप में प्रतिष्ठित है।

विश्व में लगभग 200 करोड़ व्यक्ति इस धर्म के अनुयायी है। दुनिया के 200 से अधिक देशों में बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं, किन्तु चीन, जापान, वियतनाम, थाईलैंड, म्यांमार, भूटान, श्रीलंका, कम्बोडिया, मलेशिया, लाओस, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया समेत कुल 13 देशों में बौद्ध धर्म प्रमुख धर्म है। इसके अतिरिक्त भारत, नेपाल, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, रुस ब्रुनेई, मलेशिया आदि देशों में भी लाखों करोड़ों अनुयायी हैं ।

बौद्ध धर्म दुनिया का पहला विश्व धर्म है जो अपने जन्म स्थान से निकल कर विश्व में दूर–दूर तक फैला। भारत में बौद्ध धर्म अल्पसंख्यक है जबकि दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में बौद्ध धर्म प्रमुख धर्म बना रहा है।

दक्षिण पूर्व एशिया में इण्डोनेशिया का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह देश अनेक द्वीपों से निर्मित है। इन द्वीपों को भारतीय पुराणों में सुवर्णद्वीप कहा गया है। इन्हीं द्वीपों में से एक है सुमात्रा। सुमात्रा में सबसे पुराना राजनीतिक केन्द्र श्री विजय था जो पलेमबड़, के नाम से कैपर नदी के तट पर आज भी मौजूद है। यह नगर चौथी शताब्दी से पहले स्थापित हो चुका था। श्री विजय संस्कृत एवं विद्या का केन्द्र बन गया था। चीनी यात्री ई–चिङ् 688–695 ई0 में सात साल रहकर यहाँ पढ़ा। उसने लिखा है कि चीन से भारत जाने वाले भिक्षु श्री विजय में ठहरकर संस्कृत पढ़ा करते थे। इसी श्री विजय ने कालान्तर में जावा की विजय की और अपने शैलेन्द्र वंश की अद्‌भुत कृतियों बरोबुदूर आदि का निर्माण किया। श्री विजय महायान बौद्ध धर्म का गढ़ था और ग्यारहवी सदी तक अपनी विद्या के लिए प्रसिद्ध था। सुवर्णद्वीप धर्मकीर्ति के पाण्डित्य की कीर्ति सुनकर तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार करने वाले विक्रमशिला के आचार्य दीपंकर श्री ज्ञान (981–1054 ई0) बारह वर्ष उनके पास पढ़ते रहे।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन के अनुसार जावा में चण्डी मेन्दुत् शैलेन्द्र–कालका सुन्दर बौद्ध–मन्दिर है। यह 30 गज लम्बे 26 गज चौड़े और 22 फीट ऊँचे चबूतरे पर खड़ा है। बीच में मुख्य–मंदिर 15 वग गज में अवस्थित है। दीवारों पर कई सुन्दर मूर्ति पंक्तियाँ हैं, मध्य पंक्ति में उत्तर–पूर्व पद्मासना अश्टभुजा देवी की मूर्ति है; देवी के दोनों तरफ सुअलंकृत प्रभामण्डलित दो मानुश–मूर्तियाँ हैं जिनके एक हाथ में कमल और दूसरे में चमर है। देवी के दाहिनेवाले हाथों में शंख, वज्र, बिम्ब तथा माला है और बायें वाले में परशु अंकुश, पुस्तक और एक कोई गोल सी चीज है। इस पंक्ति के सामने की तरफ पद्मसर से तीन पद्मासन उठते दिखलाये गये हैं, जिनमें बीच वाला बाकी दो से कुछ ऊँचा है। बीच के पद्म पर दो नागों के सहारे मुख्य–मूर्ति संभवतः देवी बैठी है, जिसके चारों हाथों में से दो ध्यानमुद्रा में गोद में पड़े हैं, बाकी दो में से एक में माला और दूसरे में पुस्तक है। दोनों पार्श्ववर्त्ती आसनों पर दो और मूर्तियाँ हैं, जिनमें एक के हाथ में फूल और दूसरे के हाथ में कमलासन पर निहित रत्न है। पिछली दीवार की बीचवाली रूपावली के मध्य में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की सुन्दर मूर्ति है।

मेन्दुत मंदिर में बहुत सी सुन्दर बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियाँ हैं। बुद्ध की मूर्तियों में दोनों पैर आसन से नीचे लटके हुए हैं; बोधिसत्व ललितासन, अर्थात् उनका एक पैर नीचे लटकाये अर्द्धपद्मासन हैं। यहाँ एक दस फीट ऊँची बुद्ध की प्रतिमा एक पत्थर से बनी हुई है। उसके पादपीठ में एक चक्र में दोनों तरफ दो मृग हैं, यही धर्मचक्र–प्रवर्तन (सारनाथ) को सूचित नहीं करते, बल्कि दोनों हाथ भी उसी मुद्रा में हैं। बुद्ध की मूर्तियाँ सीधे–साद चीवर में बगैर किसी सजावट के हैं, किन्तु अवलोकितेश्वर और मंजुश्री की मूर्तियाँ अच्छे वस्त्रभूषण से अलंकृत हैं। ये तीनों ही मूर्तियाँ बृहत्तर भारत की मूर्तिकला के सर्वश्रेश्ठ नमूने हैं– वि ेशकर बुद्ध की इतनी सुन्दर मूर्ति तो गुप्तकाल में ही मिलती हैं।

बोर्नियों में प्राप्त सबसे सुन्दर धातु की वस्तु एक पीतल की बुद्धमूर्ति है, जो मउरा कमाङ् के पास कोता–बेगन में मिली थी। यह जाकरता (बताबिया) म्यूजियम में रखी गई थी, जहाँ से उसे 1931 की पेरिस– प्रदर्शनी में भेजा गया। डच–प्रदर्शनागार में आग लग जाने से यह अनुपम मूर्ति नष्ट हो गयी। मूर्ति खड़ी थी. दाहिना घुटना जरा सा आगे बढ़ा हुआ था। अत्यन्त सूक्ष्म पारदर्शक वस्त्र का उत्तरासंग और ऊपर से उसी तरह की एकांस संघाटी थी। मूर्ति के चेहरे पर हर्श की हल्की सी रेखा झलकती थी। नेत्रों के बीच ऊर्णा का चिन्ह नहीं दिखाई पड़ता था। उष्णीय कुछ अधिक ऊँचा था। दाहिना हाथ उपदेश–मुद्रा में और बायां ऐसे ही वक्ष के पास उठा था। दाहिने हाथ में समकेन्द्रक––चक्र तथा दूसरे महापुरुष–लक्षण अंकित थे। सारी मूर्ति भारतीय कला को प्रदर्शित करती थी, किन्तु चीवर में कहीं–कहीं गंधार कला की भी छाया दिखलाई पड़ती है। इस प्रकार सुवर्णद्वीप में बौद्ध संस्कृति, मूर्ति कला के माध्यम से भी प्रकाशित है।

दक्षिण पूर्व एशिया बृहत्तर भारत एक पुरातन सांस्कृतिक अविभाज्य अंग है। दक्षिण पूर्व एशिया के देशों और द्वीपों के लिए प्राचीन भारतीय साहित्य में सुवर्णभूमि तथा सुवर्णद्वीप शब्दों की चर्चा मिलती है। सुवर्णभूमि का आशय बर्मा तथा कम्पूचिया (कम्बोडिया) से है तथा शेष पूर्वी द्वीप समूह (इण्डोनेशिया आदि) सुवर्णद्वीप हैं। इतिहास करवटें बदलता रहा है। देशों की राजनैतिक सीमाओं में परिवर्तन होता रहता है। सुनामी, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप भी भौगोलिक क्षेत्रों में परिवर्तन कर देते हैं। भारतीय संस्कृति का एक मजबूत अंग बौद्ध संस्कृति है जो सहस्राब्दियों से दक्षिणपूर्व एशिया तथा अन्य देशों में फल–फूल रही है और गौतम बुद्ध के धम्म–संघ का प्रचार–प्रसार कर रही है। दक्षिण पूर्व एशिया के यात्री महाचुला लौंग कौर्न बौद्ध विश्वविद्यालय बैंगकाक (थाइलैण्ड) के अतिथि प्राध्यापक चर्चित इतिहासविद् प्रो० महेशकुमार शरण ने 'थाइलैण्ड पर्यटकों का देश' नामक ग्रन्थ के पृ०–20 पर लिखा है कि– ''थाइलैण्ड का प्रारम्भ में ''स्याम'' नाम था। थाइलैण्ड की राजधानी बैंकाक है

और इसकी सीमा पर बर्मा, लाओस, कम्बोडिया और मलेशिया हैं''।

''स्याम'' की सीमा आधुनिक थाइलैण्ड से कुछ अगल–बगल छोटी बड़ी रही होगी। चन्द्रगुप्त वेदालंकार की पुस्तक बृहत्तर भारत। (प्रथम संस्करण 1939 द्वितीय संस्करण जनवरी 1969 प्रकाशक राजधानी ग्रंथागार 59एच/वी लाजपतनगर, नई दिल्ली 24) में स्याम देश में बौद्ध संस्कृति के अस्तित्व पर बहुत विस्तार से विचार किया गया है। ध्यातव्य है कि चन्द्रगुप्त वेदालंकार ने स्याम की 1939 की राजनैतिक तथा भौगोलिक सीमाओं को ध्यान में रखकर बातें लिखी होगी। संस्कृति सनातन और शाश्वत होती है वह भूगोल और राजनीति की सीमाओं से परे होती है।

मान्यता है कि स्याम देश में बौद्ध धर्म का 422 ई0 में प्रविष्ट हुआ यहाँ के राजा और प्रजा बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। स्याम का धर्म बौद्ध धर्म है। तेरहवीं शताब्दी में स्याम देश (कम्बुज–कम्बोडिया की अधीनता से) स्वतंत्र हो गया। इसके पश्चात स्याम देश में बौद्ध धर्म का तीव्र गति से प्रचार–प्रसार हुआ। सूर्यवंशराम ने सिंहल द्वीप से संघराज को भी स्याम बुलाया और उससे प्रव्रज्या ग्रहण की। स्याम देश के बौद्ध भिक्षुओं की जीवन शैली पर 'जैरेमिअस–वन–वलीत' का लिखा हुआ सत्रहवीं शताब्दी का एक लेख है जिससे पता चलता है कि बौद्ध भिक्षुओं का जीवन अत्यंत सादा तथा तपोमय होता था। लेख में कहा गया है कि देश भर में बहुत से छोटे मंदिर है। ये बहुत सुन्दर बने हुए हैं। सब भिक्षु पीला चीवर पहनते हैं। कुछ भिक्षु लाल रंग का चीवर धारण करते हैं। भिक्षुओं के सिर मुंडे रहते हैं। इनमें से जो विद्वान हैं वे पुरोहित बनाये जाते हैं। भिक्षु लोग अपने पास धन नहीं रखते और न वे रखना ही चाहते हैं। उनके खाने के लिए राज्य की ओर से या भिक्षा द्वारा भोजन मिल जाता है। वे उतना ही मांगते हैं जितना एक दिन के लिए पर्याप्त होता है आदि।

स्याम देशवासियों के मन में एक बात घुसी रहती थी कि चाहे तीन मास ही क्यों न हो प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में एक बार भिक्षु अवश्य बनना चाहिए। इससे जहाँ यह हानि पहुँची कि भिक्षुव्रत सर्वसुलभ हो गया है वहीं यह भी लाभ हुआ कि समस्त जाति में एकानुभूति पैदा हो गयी। भिक्षुक और गृहस्थ एक दूसरे का ध्यान रखने लगे। देखने में यह बात साधारण लग रही है पर कल्पना करें कि जब कोई व्यक्ति तीन मास तक भिक्षुक के रूप में मनसा–वाचा–कर्मणा रह लेगा तो निश्चित ही उसमें ''बुद्धत्व'' की भावना बलवती होती रहेगी जो स्वकल्याण से आगे बढ़कर लोककल्याण का पथ प्रशस्त करेगी। स्याम देश के भिक्षुओं में सर्वोपरि स्थान पाने वाले भिक्षु को 'संघराज' कहा जाता था। यह पद प्रायः किसी राजपरिवार के व्यक्ति को ही प्राप्त होता था। इससे स्पष्ट है कि स्याम देश में बौद्ध धर्म को राज्याश्रय प्राप्त था। डॉ० महेशकुमार शरण के शब्दों में स्याम में बौद्ध धर्म चार कालों में लोगों का धर्म बना। प्रथम काल थेरवाद या दक्षिण बौद्ध धर्म, दूसरा काल है महायान या उत्तरी बौद्ध धर्म, तीसरा काल है बर्मा (पगान) बौद्ध धर्म तथा चौथा है सिंहली बौद्ध धर्म।

बौद्ध मंदिरों को थाई भाषा में वाट कहा जाता है जो गाँवों की आत्मा माना जाता है। दूर से बौद्ध मंदिरों के आकाश छूते गुम्बज की भव्यता दिव्यता को देखते ही मुख से निकल पड़ता है ''धम्मं शरणं गच्छामि, संधं शरणं गच्छामि, बुद्धं शरणं गच्छामि''। स्याम देश की बौद्ध संस्कृति भारतीय सांस्कृतिक आत्मा का विश्वव्यापी प्रसार है जिसे जीवन्त बनाये रखना मानवता के हित में है।

सुवर्णद्वीप में बौद्ध संस्कृति

महात्मा बुद्ध भारतीय विरासत की अमूल्य धरोहर है। वैदिक परंपरा में धीरे–धीरे जो कुरीतियां पनप गई थी, उन्हें भारत के भीतर पहली ठोस चुनौती महात्मा बुद्ध ने दी थी। उन्होंने वैदिक परंपरा के कर्मकाण्डों पर कड़ी चोट की किंतु वेदों और उपनिषदों में विद्यमान दार्शनिक सूक्ष्मताओं को किसी न किसी मात्रा में अपने दर्शन में स्थान दिया और इस प्रकार भारतीय सांस्कृतिक विरासत को एक बने–बनाए ढर्रे से हटाकर उसमें नवाचार की गुंजाइश पैदा की और भारतीय कला, संस्कृति एवं साहित्य के विकास में महती भूमिका का निवर्हन किया।

बौद्ध धर्म भारत की समण परम्परा से निकला धर्म और महान दर्शन है। बौद्ध धर्म के अनुयायी दुनिया के लगभग 200 देशों में फैले हुए है किन्तु चीन, जापान, वियतनाम, थाईलैण्ड, म्यांमार, भूटान, श्रीलंका, कम्बोडिया, मंगोलिया, लाओस, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया एवं उत्तर कोरिया समेत कुल 13 देशों में बौद्ध धर्म 'प्रमुख धर्म' के रूप में है। इसके अतिरिक्त जावा, सुमात्रा, आदि अनेक देश हैं जहाँ बौद्ध धर्म अपनाया गया। बौद्ध धर्म के तीव्र गति के प्रसार का प्रमुख कारण सरल सिद्धान्त, समानता, की भावना, रोचक शैली–भाषा, जाति–प्रथा का विरोध, मठों–बिहारों की स्थापना और समय–समय पर बौद्ध संगीतियों का आयोजन था। बौद्ध धर्म की महायान शाखा के प्रादुर्भाव से जन साधारण इस ओर अधिक आकृष्ट हुआ, जिसने बौद्ध धर्म को सरल बना दिया।

बौद्ध धर्म से सम्बन्धित स्थल विश्व में अनेक धार्मिक स्थल एवं सांस्कृतिक पर्यटन के रूप में विख्यात है–

1. लुम्बिनी भगवान बुद्ध की जन्म स्थली है यह नेपाल में स्थित है। यूनेस्कों तथा बौद्ध सम्प्रदाय के अनुसार यह स्थान कपिलवस्तु में है।
2. बोधगया बिहार की राजधानी पटना दक्षिण पूर्व में लगभग 101 कि.मी. दूर स्थित बोधगया, गया जिले से सटा एक छोटा शहर है, यही पर भगवान बुद्ध को बोधि पेड़ के नीचे तपस्या करते हुए ज्ञान की प्राप्ति हुयी थी। सांस्कृतिक पर्यटन के रूप में सन् 2002 ई. में यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।
3. सारनाथ, वाराणसी (काशी) शहर से 10 कि.मी. पूर्वोत्तर स्थित प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थल है। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात भगवान बुद्ध अपना प्रथम उपदेश यहीं पर दिया जिसे धर्म चक्र परिवर्तन कहा गया।
4. कुशीनगर बौद्ध धर्म स्थल है यहाँ भगवान बुद्ध को महापरिनिर्वाण हुआ था।
5. श्रावस्ती बौद्ध धर्म का पवित्र स्थल है। यहाँ के श्रेष्ठी अनाथ पिण्डिक स्वर्ण मुद्राएं रूचि करके भगवान बुद्ध के लिए जेतावन विहार बनवाया था।
6. राजगीर बिहार के नालंदा जिले में स्थित कभी मगध प्रान्त की राजधानी हुआ करती थी। महात्मा बुद्ध ने कई वर्षों तक

यहाँ ठहराव किये एवं अपने उपदेश भी दिये। बुद्ध उपदेशों को लिपिबद्ध यहीं पर किया गया तथा पहली बौद्ध संगीत भी यहीं हुयी थी। बौद्ध धर्म के अनेक पवित्र धर्म स्थल सांस्कृतिक पर्यटन के रूप में विख्यात हैं– संकिस्सा, वैशाली, पटना, गया, कौशाम्बी, मथुरा, कपिलवस्तु, देवदहा, केसरिया, पावा, नालंदा, वाराणसी, साँची रत्नागिरी, एलोरा, अजंता, भरहुत के साथ ही साथ विश्व के अन्य देश में भी इसकी प्रभुता है– लाओस, कम्बोडिया, भूटान, थाइलैंड, म्यांमार और श्रीलंका यह देश, अधिकृत बौद्ध देश है। क्योंकि इन देशों के संविधान में बौद्ध धर्म को 'राजधर्म' या राष्ट्रधर्म का दर्जा प्राप्त है।

बौद्ध धर्म के सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों में महत्ता बहुत ही उच्च कोटि एवं दिव्य दृष्टि से अभीभूत है। क्योंकि यह स्थल शान्ति, रमणीयता से भरपूर एवं स्वच्छ स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यन्त प्रभावशाली है। इसी के सन्दर्भ में यह विश्व विख्यात है और धर्म सरल समरसता की दृष्टि से अनुनय योग्य है ।

बौद्ध धर्म में वास्तुकला एवं शिल्पकला दोनों कलाओं का समान रुप से विकास एवं प्रसार हुआ, साथ ही साथ बौद्ध धर्म में भारतीय संस्कृति को आगे ले जाने में अपनी महती भूमिका निभायी है। बौद्ध धर्म ने कला एवं संस्कृति के साथ ही साथ अपने साहित्य के माध्यम से भी भारतीय धर्म को एक नयी गति प्रदान किया। बौद्ध धर्म और दर्शन से सम्बद्ध प्राचीन या मूल साहित्य दो भाषाओं में उपलब्ध होता है– (क) पालि भाषा (ख) संस्कृत भाषा। जिसमें पालि साहित्य निम्नवत् था–

(क) पालिभाषा : बुद्ध के समय पाटलिपुत्र के आस–पास जिस भाषा का प्रयोग होता था उसे पालि कहा जाता था। यह दो भागो में विभक्त था। (अ) त्रिपिटक– सुत्तपिटक, विनयपिटक, अभिधम्मपिटक। (ब) अनुपिटक– बुद्धघोश का पूर्ववर्ती साहित्य, बुद्धघोषकालीन साहित्य। आचार्य बुद्धदत्त और धर्मपाल की रचनाएं, महावंश कच्चान व्याकरण और अधिधम्मत्थ संग्रह आदि ग्रन्थों की रचना भी इस युग में मानी जाती है।

(ख) संस्कृत भाषा : अभिधर्म कोश, महावस्तु ग्रन्थ, ललित विस्तार, दिव्यावदान, कल्पना मन्डतिका, चतुश्तक, जातक माला इत्यादि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बौद्ध धर्म या दर्शन स्वयं में एक वृहत् दार्शनिक अवलोकन है। जिसके माध्यम से हम दार्शनिक विवेचनाओं के अतिरिक्त उसके कला, संस्कृति एवं साहित्य के माध्यम से एक नये युग का सूत्रपात करते है, जो मानव जाति को एक नयी दिशा प्रदान करता है। प्रो० काहन के अनुसार– ''यह स्पष्ट है कि बौद्ध कला की अनुभूति हमारे लिए गम्भीर अनुभूति रखती है। विभिन्न कलाओं में बौद्ध धर्म ने ऐसी कृतियां दी है जो पाश्चात्य कला के सर्वोच्च नमूनों के बराबर रखी जा सकती है। यह बात भी सत्य है, कि भारतीय कला का प्रारम्भ बौद्ध कला से ही होता है। यह कला गुफाओं तथा मन्दिरों में विकसित हुयी है। दक्षिण में अजन्ता और एलोरा की गुफाएं भारतीय चित्रकला और शिल्पकला का विश्व में उत्कृश्ट और उच्च आदर्श उपस्थित करती है। अशोक के स्तम्भ पच्चीकारी तथा शिल्पकारी के अद्वितीय उदाहरण है। सांची का स्तूप कला की दृष्टि से अद्वितीय है, यह सब बौद्ध धर्म के प्रभाव से ही सम्भव हुआ है''।

सन्दर्भ सूची :

1. भारण, महेश कुमार, थाइलैण्ड पर्यटकों का देश, ए एस आर पब्लिकेशन्स, प्रथम एडिशन, 2014।
2. वेदालंकार चन्द्रगुप्त, बृहत्तर भारत, प्रथम संस्करण 1939 द्वितीय संस्करण जनवरी 1969 प्रकाशक राजधानी ग्रंथागार लाजपतनगर, नई दिल्ली।
3. महात्मा बुद्ध के समकालीन लोग, 15 अगस्त 2020 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 27 अप्रैल 2020।
4. आनंद केटिश कुमार स्वामी, हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म, न्यू यार्क, गोल्डन एलिक्सिर प्रेस।
5. मीर्चा ईटु, दर्शन और धर्म का इतिहास, बुखारेस्ट, कल की रोमनिया का प्रकाशन संस्था।
6. बौद्ध धर्म और श्रीलंकन संस्कृति 20 दिसम्बर 2016 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 10 दिसम्बर 2016।